शब्दावली तथा संज्ञापाठ

॥ श्रीः ॥

शब्दावली ।

तथा

संज्ञा पाठ.

बीजककी टीका प्रकाशक महात्मा पूरणसाहेबकृत

जिसको

एककबीरपंथी साधु काशीदासजीद्वारा शुद्ध प्रति प्राप्तकर,
सर्व कबीरपंथी तथा जिज्ञासुओंके लाभार्थ,

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण : फरवरी २००७, सम्वत् २०६३

मूल्य १५ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estat
Pune -411 013.

अथ शब्दावली ।

पूरण साहेब कृत ।

शब्द १.

देखो अतिसुन्दर छबि नीकी॥ टेक ॥ मंगल दायक सब सुख लायक, देखि सकल छविलागत फीकी॥ १ ॥ कृपा करत प्रभु दीन दिवाकर, भ्रांति मिटावत सकलो जीकी ॥ २ ॥ शरण गये सकलो दुख मेटत,सुख उपजावत देखत सीकी॥ ॥ ३ ॥ निज पदमाहिं लेत बैठारी, गांठि छोडावत मैं ममताकी॥ ४ ॥ गुरुसम को उदार जगमाहीं,पूरण कीन्ह परख अति नीकी ॥ ॥

शब्द २.

बन्दनिये गुरुदेव तुमको॥ टेक॥कालजालके फन्दा भारी,परखे लखायो भेवो॥ १॥ वेद शास्त्र सब खोजत हारे,मर्म न जाने केव ॥ २ ॥गुरु समान और को दाता, ताकी करिये सेव॥ ३ ॥ साहेब कबीर अभय पद दाता, पूरण परख समेव ॥४॥

शब्द ३.

पतित पावनको सुंदरध्याना॥ टेक ॥निरखत वदन प्रसन्न सुखदायक, देह आदि विसरत जग भाना॥ १॥ चक्रांकित शिर टोप विराजै, ता ऊपर दश तार बखाना ॥ २ ॥ तिलक ललाट शुभ्र अति नीको, तुलसी माल गले बिच नाना ॥३॥ज्ञानको अचला मुक्ति मेखला, अष्ट सिद्ध सेली परवाना॥ ४॥दया सिंघासन आपविराजे पूरणदास चरण लपटाना ॥५॥

शब्द ४.

दर्शनकी बलिहारी गुरु तुम्हरे ॥ तुम्हरे दर्शते संकट कटतु हैं, कर्म मिटावत भारी॥ १॥ संत स्वरूपी आप कृपानिधि,खोलत भर्म केंवारी ॥२॥ जिन्हें दरस सुखदियो दयाकरि, आवागवन निवारी ॥ ३ ॥ सुख स्वरूप कबीर कृपानिधि, पूरन परख बिहारी॥४॥

(गुरुस्तुति) शब्द ५.

शरण तुम्हारे आयोजी गुरु ॥ टेक ॥ त्रिगुण मायाके फंदा परि परि, जुगन जुगन जहँडायो। चाहन योग ध्यान अब मोही, नाम जगीरी पायो ॥ २ ॥ लोक परलोक कुछ नहीं चाहों, सर्गुण निगुण नहिं भायो॥३॥पूरण ज्ञान विज्ञान फीक भौ, जब पारख थिति आयो ॥५॥

शब्द ६.

कहांलों कहों गुरुपद परतापू ॥ टेक ॥ जो मुख होत जीभ दश लाखा, तोउ न वर्णि सकत प्रभु जापू ॥ १ ॥ अनेक जन्मके जीव वेहाला, तिनको मिटायो महा भ्रम दापू ॥२॥ संकटमें संतनको तारा, साधुरूप धारे पुनि आपू ॥३॥ बादशाहको कसनी दीन्हा, औ मेटा सकलो संतापू ॥ ४ ॥ भेषकी टेक राखु करुणामय, पूरन काह कीन्ह धौं पापू ॥६॥

शब्द ७.

तेरा दिल चाहे उधर देख मैं देखूंगा तुझे ॥टेक॥ तूं तो मुकत्यार यार स्वतःसिद्ध आपे आप औरको न जानो एक आसरा तेरा है मुझे ॥१॥ चाहे तो चंद्रमा चकोरनको त्याग करै, पर चकोरनकी आग चंद्र विनु कैसे बुझै ॥ २ ॥ चाहे तो प्रकाश सकल नेत्रनको त्याग करै, पर विन

प्रकाश नेत्रनको जग कैसे सुझे ॥ ३ ॥ सतगुरु दयाल तेरो सेवक हौं बारबार, पूरनके तुमही एक और कोई नाहिं दुजे ॥ ४ ॥

शब्द ८.

तेरी खुसी देख या न देख,मैं देखूंगा तेरेचरणोंमें ॥टेक॥ माय बाप सकल टारे जाति पांति सब बिसारे, सकल आस छाडि गुरु आलिपरो चरणोंमें ॥१॥ त्याग दई सकल लाज काहु से न राखौं काज, घर घरके भिखारी भये नाम सना कर्णोंमें॥२॥हरदम तेरो अध्यास और कहुं नाहिं भास, सबसे ह्वै गयो निरास यो तनही भरनोमें ॥३॥ नाम तेरो है दयाल पूरन फिरत है बेहाल, कबधौं करिहो निहाल आवे जब सरनोमें ॥ ४ ॥

शब्द ९.

मेरी प्रीतिके निबाहनहारे, लीजे खबरिया

हसाप्यारे ॥ टेक ॥ हौं अनाथ कहलावत तेरो ॥ काहे निकार मोहिं बाहर डारे ॥ जो दुरियावो मोहिको सतगुरु तबहुँ न छाँडों चरण तिहारे ॥ १॥ तुमरो नाम सुना प्रभु श्रवनन, की प्रभु पतित अनेक उबारे ॥ ॥ करहु दया निज टेक निबाहो, जो तुम बिरद जगतमें धारे ॥ २ ॥ जो कहो मोहिं न जगसे काजा, रहत अलिप्त सबन सों न्यारे ॥ तो उपदेश कीन्ह गहि बांही, अब हम जाब कौनके द्वारे॥ ३॥धारि देह जीवन हित लागी, दे परचे अनेक उबारे ॥ ताते भार दीन्ह तोहि पूरन, छिमा करो अपराध हमारे ॥ ४ ॥

शब्द १०.

धन्य सतगुरु तुमरी बलिहारी ॥ टेक ॥ मैं मति हीन छीन निज कर्मन, दीन उधारण लीन्ह उबारी ॥ १॥ जिमि अंकूर तपे विन बारी, ताको अम्बुज सींच खरारी ॥ २ ॥ आनिके बेगि लीन्ह

जगाई, नहीं तो परते भर्म बेगारी॥ ३॥ परमदयाल दयाके सागर, महाकष्ट दुखदुंद निवारी ॥४॥ सदा रहत दासनके संगा, पूरन परखावत भर्म कँवारी ॥ ५ ॥

शब्द ११.

मम बोहित तुम सेवनहारा, लीजे खबरी हंसा प्यारा ॥ टेक ॥ जग समुद्र अज्ञान भरो जल तृष्णा तरंग करत ललकारा ॥ १ ॥ काम क्रोध जल जंतु अपर्बल, बैठो नगर भारि हंकारा ॥ ॥२॥ मोह भँवर बीच आनि परो है, सूझि परे नहिं वार औ पारा ॥ ३ ॥ बूडत नाव उबारो साहेब, आदि अंतकेहो कंडिहारा ॥४॥ अशरन शरनबिरद सम्हारो, पूरन आयो शरणतुम्हारा५॥

शब्द १२.

तुम्हरे दर्शनको बन्यो हौं भिखारी॥ मधुकरयों सब फिरत जगतमें, कब धौं मिलो मैं कवल सु

खारी ॥टेक॥ काम क्रोध मद लोभ अपर्बल, तृष्णा उठत लहर अति भारी॥मन रात्यो नाना विषयनमें, इंद्रिन बाट निपट मोरि पारी॥ १॥ चित चंचलको को समुझावे,खांड छाडि फांकत हैखारी॥ गुरुविचार पर छिनहु रहत नहिं,जग अनित्यमा भई मतवारी ॥२॥ इतना अवगुण मोमें रहत सदा, तापरसम्रथ करो दिठियारी॥ जेहि हेतु मुनि जन योग करत हैं, त्यागे राज कुटुम्ब धन नारी॥३॥पूरन एक भरोसा आवत, प्रभु जीवनके हितकारी॥ शरण आयेके त्यागत नाहीं, बन्दीछोर बिरत अतिभारी॥ ४ ॥

शब्द १३.

मैं लाचारके तुम रखवारी॥टेक॥ नहिं मोहिं द्रव्य बांहबल नाहीं, ना मोहिं विद्या बल अधिकारी ॥ १ ॥ ना मैं सिद्ध न साधनको

बल, ना मैं मंत्री ना व्रतधारी ॥ २ ॥ तपसीहौं ना मैं दीन परम गुरु, बाँह गहेकी लाज तुम्हारी॥ ॥ ३ ॥ बालकके दुलार निबाहन, तुम विन कौन पूरन सुखकारी ॥ ४ ॥

शब्द १४.

परो है कष्ट अति भारी मोको ॥टेक॥ पाखंडिन पीछा बहु कीन्हा, तासे चोट लगत है कारी ॥ १॥ दीन जानि उपहास करा चहो, मैं लाचार गरीब बिचारी ॥ २ ॥ ना मैं सिद्ध न साधनको बल, मैं कंगालके तुम रखवारी ॥ ३॥ सगरी लाज तुम्हारी परम गुरु, पूरन तुम पद केर भिखारी ॥ ४ ॥

शब्द १५.

तुम चरणाम्बुज विशद प्रयागे ॥ मम मन कठिन भँवर अति दारुण, कारण कौन तत्र नहिं लागे ॥ टेक ॥ अब यह मांगों तोहि दया

निधि कर जोरे प्रेमन बहु पागे॥ जो रज पावन करत जगत को, सोइ आय मस्तक पर लागे ॥ ॥ १ ॥ और न इच्छा होय कबहुँ कछु, निशि दिन रहू चरणनके आगे॥ चरण प्रतापते होत ज्ञान गम, बहुत जीव जाते होत सुभागे ॥२॥ महिमा तुव चरणनकी साहेब, बिन जाने सब जीव अभागे॥ताते काया रहे जौलों जग,तौलों रहौं चरणमें लागे ॥३॥ आखिर चरण चरण ह्वै जैहों, जैसी सीप बूंदकी जागे ॥ साहेब कबीर सुखरूप कृपाघन, पूरनदास याहि बर मांगे॥४॥

शब्द १६.

तुमरे नामको भरोसा भारी, हो प्रभु सेवकके सुखकारी ॥ टेक ॥ सिद्ध चौगसी बंदि परे तब, गुरू गुरू करि कीन्ह पुकारी ॥ तुरतहिं जाय छोडायो तिनको, शाह सुलताना कीन्ह सुखारी ॥ १ ॥ एक दिना काशीके माहीं, कुष्ठि

साहु आयो अति भारी॥ पद्म नाभने परचै दीन्हा नामप्रतापते कष्ट निवारी ॥ २ ॥ नाम लेत तारे बोहित प्रभु, साहु दमोदरको भय हारी॥ इंद्रमती जब टेर कियोहै, नाम प्रताप उतरो विषकारी ३ नाम तुम्हार अटल प्रभु युगयुग, जीव अधम अनेक उबारी॥ याहीते निश्चय भई पूरन, करिहो सुखी सब दुःख बिडारी॥४॥

शब्द १७,

कैसेरहौं जगमाहीं करुणायतनबिन ॥ जैसे जल विनु मीन दुखित होय, तलफि तलफि मुर-झाई॥टेक॥कोई तो आपै ब्रह्म बतावे, सूर्यप्रभाकी नाईं॥कोई तौ कहे यह आतम स्वयंभु, जल तरंगकी नाईं॥ १ ॥ कोई तो कहे दूजा है कर्ता, कोई तो कहत कछु नाहीं॥कोई तो कहत यह देह ब्रह्म है, मेरो मन ना पतियाई॥२॥कोई योग कोइ

ध्यान बतावे, कोइ कोइ अलखलखाई।।कोई कहे ज्ञान विचार करो फिरि, आप ब्रह्मजग भाई।। ३।। गुरु कबीर पारखकी रासी, सब सुखकेसुखदाई। ता पदसे कैसे होउं न्यारा आपुहि पूर्न कहाई४

शब्द १८.

क्यों न जपो मनलाई, अक्षर दोउनीके ॥ गुरु गुरुपद महामंत्र हैं, और मंत्र कछु नाहीं ॥टेक॥ब्रह्मा जपत अरु विष्णु जपत हैं, और जपत शिवराई ॥ शास्त्र पुराण यह साख बखानत, गुरुते परे कोउ नाहीं ॥ १ ॥ गुरुते सकल ऋद्धि सिद्धि होत हैं, गुरुते परमपद पाई ॥ गुरुते ज्ञान अरु गम्य होतहै, गुरुविन कछु न बसाई ॥ २ ॥ गुरु विनु काहूको काज सरे नहिं, बहुत भये जगमाहीं॥ राम कृष्ण तिनहूँ गुरु कीन्हा, मूरख चेतत नाहीं ॥ ३ ॥ और मंत्र

सब काल स्वरूपी. जीवन देत भुलाई॥गुरु मंत्र यह पूरन कृपाघन, जीवनको सुखदाई ॥ ४ ॥

शब्द १९.

गुरुते और नहिं कोई,मन देख विचारी॥ ज्ञानी मुनि सब ज्ञान बखाने,रीते गये सब रोई॥टेक। गुरुके गुण सब गावहीं हो जग अँधरेकी नांई ॥ टोय टोय कोइ पार न पावे, मन माने मति भोई ॥ १ ॥ कोइ ब्रह्मा कोइ विष्णु कहे गुरु, कोइ कहे शिव जोई॥ कोई कहे सतगुरु पारब्रह्म है, या विधि गैल बिगोई ॥२॥ कोई परम गुरु पुरुष बखाने,ईश कहत कोइ लोई ॥ कोई कहे अरु अन्तरजामी, सबमें भरो है सोई ॥३॥कोई कर्ता कोई माया कहे गुरु, मति बुधि सब गइ खोई ॥ पूरन त्रिपद लांघे नाहीं, केसे गुरुपद होई ॥ ४ ॥

शब्द २०.

बकि बकि सब बौराने, गुरुकोई न जाने ॥ अंध धुन्ध मत प्रगट कियोहै,सब जीवनकोताने ॥टेक॥घरहिं घर सब गुरुवा बनेहैं,कीन्हे बहुत बँधाने॥बन्दिछोड बिन नाहिंउबारा,ये सब यम मस्ताने।१।बन्दि छोड़ावन जगमें निकरे,आप परे बन्दि खाने॥जो पूछो गुरु कहिये, तो कहत आनकी आने॥२॥कोई कहे गुरु सतचित आनँद कोई कहे पुरुष पुराने ॥ कोई मानुष कोइ देव कहत है,यहि विधि भर्म भुलाने॥३॥कोई शब्द कोई वेद कहत गुरु, कोई आतम अनुमाने ॥ त्रिपद परख पाये बिन पूरण, कैसे परे पहिचाने ॥ ४ ॥

शब्द २१.

जगसे प्रीति न कीजिये,गुरुको ज्ञान अमल रस पीजिये॥ टेक ॥ ये जीव सब जहँडाय

गये हैं तिनकी बातें का लीजिये ॥ १ ॥ रांडने मारे सांड महा बल, ताके संग न छीजिये॥ २ ॥ कनक कामिनी बस मंद अभागी, ताहि देखि न रीझिये ॥ ३ ॥ कहैं पूरन तोहिं दृढ समुझाऊं, निरखि परखि पगु दीजिये ॥४॥

शब्द २२.

समुझि बूझि कछु लीजिये मनुवा, में चित्त न दीजिये ॥ टेक ॥ जो आपहि बौराय गयोहै, ताको संग न कीजिये ॥ १॥ विषयनके मद माते जियरा, तिनके ज्ञान नहिं भीजिये ॥ २॥ चोखो तीर पषानमें मारो, नास्ति हेतु नहिं रीझिये॥ ॥ ३ ॥ कहैं पूरन सुखरूप परख पद, ताहि अमल रस पीजिये ॥ ४ ॥

(राग बिहाग) शब्द २३.

प्रीति न काहूसे कीजिये जियरा, गुरुके चरन चित दीजिये ॥ टेक ॥ मोह जालमें भयो काल

जग, ताहि देख नहिं रीझिये॥ १॥जगत प्रीतिकी अजर शृंखला, तोरि तमकी यश लीजिये ॥ २ ॥ इंद्रजाल सपना सम जग यह, तामे चित्त नहिं दीजिये ॥३॥ पूरन प्रीति दुखहीकी खानी, छाडि परखि सुख पीजिये ॥ ४ ॥

शब्द २४.

आप न बूझे क्या और बुझावे, बिनु पारख नर भटका खावे॥ टेक॥ ग्रंथ पुराण बहुत जग बाँये, याते कहा आवागवन नसावे ॥ १ ॥ रहनि बिना सब कहनी कांची, बिन भोजन कहुं भूख-हुजावे ॥ २ ॥ बेटी बेटा चेली चेला मोह जाल कस जानि बढावे॥ ३ ॥ घर छोडे मठकी करे आशा, पूरन व्याधि कहा शीस चढावे ॥ ४ ॥

शब्द २५.

गुरुजी तेरा भजन भरोसो भारी ॥टेक॥ शरणागतकी बाँह गहत हो, भवसे पार उतारी ॥ १॥

बडे बडे अपराधिन तारे हिंदु तुरुक नरनारी ॥ ॥ २॥गुण अवगुण एकौ नहिं जानत हौं पशु मूर्ख जनारी ॥ ३ ॥ जगसे भागि आयो तुव शरणा, पूरन दीन भिखारी ॥ ४ ॥

शब्द २६.

मेरो मन बैरागिया,जब सीयो साहेब चरण ॥टेक ॥ चरण प्रताप महा अघ नाशत, भेटत जन्म रु मरण ॥१॥दुख दारिद्र विनाशतगुरुपद होय रहो शरण शरण॥ २ ॥ परख प्रकाशी सब सुखराशी, जीवन मुक्ति करण ॥ ३ ॥ सबहीके सुखदाई पूरन, भव भय रोग हरण ॥ ४ ॥

शब्द २७.

होयरहो साहेबशरणमन छाडिजगतकीआस ॥टेक॥ जग आशा औ स्वर्गका वासा यही कालको फांस ॥ १ ॥ नर नारी औ माल खजाना,छाड अपर्बल गांस ॥ २ ॥ सुन्दर तन

अरु सुन्दर जग यह, सब स्वप्ने को भास ॥ ॥३॥पूरन परख जौलौं नहिं पावे तौलौं भर्म विश्वास ॥४॥

शब्द २८.

मेरी महामाई महामाई तैं सकल जीवनको खाई ॥टेका॥ तोको कोई न जीतन हारा, देखो तीन लोक मंझारा, ज्ञानी योगी भक्त अपारा, तैंने सबको कियो संघारा ॥१ ॥ ब्रह्मादिकका मस्तक फोडा, रुद्रादिक के डारा कोडा, विष्णु आदिकको नाहींछोडा, इन्द्रादिकको कीयो घोडा ॥२॥बडे बडेनसे नहिं बनिआई, जग जीवनकी कहा चलाई, तैंने सबकी राह भुलाई, गाफिल करके दियो सुलाई ॥ ३ ॥ पूरनदास गरीब विचारा, सेवक गुरु कबीरको प्यारा, यापर नाहीं दस्त तुम्हारा, ऐसा जानि करो निस्तारा ॥ ४ ॥

शब्द २९.

भजो रे मन सतगुरु कृपालके नाम॥ टेक ॥ नाम प्रताप अटलतिहुंलोकमें, सब विधि मंगल धाम ॥१॥ और नहीं कहुं आप महा प्रभु, लागि रहे निशि जाम ॥२॥ नाम रटन जिन्ह जगमें कीन्हो ते पाये विश्राम॥३॥नाम अशंक सकल सुखदाता करिहैं पूरन काम ॥४॥

(राग पिस्ता) शब्द ३०.

जाकरसंदेस कहियो मेरे विरहकी बात॥बेगि खबरिया लीजे, अब जान निकसि जात॥टेक ॥ तेरे बिरहके मारे, मोरे नींद न आवे॥ नयनोंसे झरिलाई जीव चैन न पावे ॥ १॥ ये कहर के दरियाव में बूडा है मेरा मन ॥ एक बख्त गस्त आवती जात है बिखरि तन॥ २ ॥ सुरता सहेली जाके तूने कहना ये हवाल॥बेगिसे दरस

दीजे दास होत है वेहाल ॥ ३ ॥ सुख निधान सम्रथ सब सुखको बीज है ॥ तेरी शरन मैं आयके पूरन अजीज है ॥ ४ ॥

शब्द ३१.

भूलिगयो नर गाफिल गन्दा, समुझत नाहिं कालको फन्दा ॥ टेक ॥ धन दारा अरु सजन सगाई विषयनमें लपट्यो मतिमन्दा ॥ मृगनयनीको रूप देखिके, होय रह्यो ताहीको बन्दा ॥ १ ॥ द्रव्य कमावन निशिदिन धावत, हाय हाय लग्यो वह छन्दा ॥ सत्संगतिमें कबहुं न बैठे, आठ पहर करे घरको धन्दा ॥ २ ॥ दिन दशमें तन छूटि जायगो, फिरि होइ भूत भरम बहु भन्दा ॥ चीन्हि नहीं प्रभुकी प्रभुताई, चली जात सपनेकी सन्दा ॥ ३ ॥ पूरन गुरु पारखकी शरण गहु, कृपामात्र करिहै निर्बन्दा ॥ नहिं तो तेरी कठिन दशा है चौरासीको लगिहैं रन्दा ॥ ४ ॥

शब्द ३२.

प्रभु बिन दुख नरको कौन हरे ॥टेक॥ यह जहां कष्ट परत दासनको, तहां तहां साहेब होत खडे ॥ १ ॥ गर्भ करे तो भरि ढरकावे होत अधीन तो फेरि भरे॥ २॥ भाव भक्तिके सदा समीपी, दंभ पाखंडते रहत परे॥ ३॥ दीन दयाल बिरद है जाको, ताको पूरन ध्यान धरे॥ ४॥

शब्द ३३.

सुनिये दयानिधि अरज दासकी॥ कृपाकिय बहु भर्म मिटायो, शंका रही नहिं गर्भवासकी॥ टेक ॥ बडो भाग मैं आपन जानों, आय परो प्रभु चरण पासकी ॥ १ ॥ यह जगकी मोहिं काह बडाई,काह थाह जड बिम्ब भासकी॥२॥ऋद्धि सिद्धि अरु मान बडाई , मम मन इच्छा नाहिं तासुकी ॥३॥ अंमृत भोजन पाय अघाई, पुनि

कस इच्छा होत घासकी ॥ ४ ॥ यह संशय मेरे मन आई, मेटहु साहेब कठिन फांसकी ॥ ५ ॥ परख बिलासी सब सुखरासी, जानत हो सब जीव फांसकी ॥ ६॥ काह छिपी तुमसे कहैं पूरन, टेक निबाहो मोर आसकी ॥ ७॥

शब्द ३४.

तुमबिन सम्रथ को रखवारा, जीवनको दुख मेटनहारा ॥ टेक ॥ जब जब कष्ट परत दासनपर, ह्वै बेहाल सो करत पुकारा ॥ धारि देह तुरत तहां प्रगटे, दुख द्वंद्वज सब दूरि बिडारा ॥१॥ कियेउ सुखी निज दासन लागी, काहे उपेक्षा कीन्ह हमारा ॥ पूत कपूत लाज जनि ताको, शरण परे निरबाह बिचारा ॥ २ ॥ करुणामय कबीर गोसांई, दीनदयाल बिरद अति धारा ॥ दीन जानि अब दाया कीजे, आय गह्यों अब

शरण तुम्हारा ॥३॥ जगमें कछु न मोरि अधिकाई, साहेब शिर सेवकको भारा॥ पूरन दुखित होय जो सम्रथ तोलाजत सब विरद तुम्हारा४॥

शब्द ३५.

याहिते आही नाम दातारा,सेवक आस पुरवन हारा॥टेक॥हीन छीन अति दीन भयो तब, जाचक आयके कीन्ह पुकारा ॥ जो नहिं आस पुरावो ताकी,तो लाजत है बिरद तुम्हारा ॥१॥ हम अस जाचक तुमहीं घनेरे मेरे तो एक तुमहीं अधारा॥तजब प्राण तो जाचब तुमसों,अब हम जाब कौनके द्वारा ॥२॥ हंसन नायक सब सुख दायक, सुनिके अरज भली चित धारा ॥ जो नहिं हमरी बांछा पुरवहु,तो हंसिहै सकलो संसारा ॥ ३ ॥ जाके सेवक होत बिकल अति, ताके साहेब कस कल धारा । पूरण याहि अंदेसा मोही, जानि बूझि कस देत बिसारा ॥ ४ ॥

शब्द ३६.

तुम बिन अरज करों केहि आगे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल लोकलों, अस को हमको करत सुभागे ॥टेक॥करुणामय कबीर कृपानिधि, साधु संत गावत सब जागे ॥ कि प्रभु अजर अमर अविनाशी, सुमिरत जाहि सकल दुख भागे ॥ १ ॥ याहिते मोहि भरोसा आवत, अरु परतीत भई बहु जागे॥अबकी बार कस बिलम कियो है, यह अचरज मनमें अति लागे ॥ २ ॥ तुम सब लायक हो सुखदायक, अरज करत मोरि मनसा पागे॥चाहो तो अपनी टेक निबाहो, नहिं तो हमहुं बने हैं नागे ॥ ३ ॥पूरन अरज करत सुख सांई,तुमकीरति मोको हित लागे॥ इतनी बिनती मानहु मोरी, जो मम सुरत निसाना दागे ॥ ४ ॥

शब्द ३७.

कृपा दृष्टि कब हेरो गुरु मोपै ॥ टेक ॥ तुम अस समरथ शिरपर राजत,दुखपावतहै चेरो॥१॥ सब लायक प्रभु हो सुख दायक, मम अपराध घनेरो ॥ २ ॥ छिमा अपराध दयाके सागर, आय परों शरण अब तेरो ॥ ३ ॥ पूरनकी यह अरज दयानिधि, चरणन न देहु बसेरो ॥ ४ ॥

शब्द ३८.

अब तो बिरद रस देखाव,गुरुजी मोको॥टेक॥ चात्रिकवत मैं पंथ निहारों, स्वाती होयके जुडाव ॥ १ ॥ जिमि चकोर चंदा तन चितवत, और नहीं चित भाव ॥ २ ॥ तुम्हारें दरस बिन अति बेहाल जिव, मिलत न परख प्रभाव ॥ ३ ॥ पूरनके सुख साहेब दाता बिनवत हौं गहि पांव ॥ ४ ॥

(राग मलार) शब्द ३९.

पावस ऋतु आई हो चेतन ॥ टेक ॥ कामके बदरा छाये दहुं दिशि, अबहीं चहत बर्षाई ॥ १ ॥ माया दामिन छिन छिन चमके, जियरा देखि डेराई ॥ २ ॥ दादुर मोर पपैया बोलें धीरज ना ठहराई ॥ ३ ॥ जो सुख साहेब कृपा करोगे, तो पूरन बचि जाई ॥ ४ ॥

शब्द ४०.

नर तन काहेको धरे हो चेतन ॥ टेक ॥ पशुवत कर्म करत हो जगमें, विषयन संग जरे ॥ १ ॥ सत्संगति चीन्ही नहिं कबहूँ, बहु भर्म फन्द परे ॥ २ ॥ सुत दारा परिवार कुटुम सब, मोह धारमें परे ॥ ३ ॥ पूरन परख पाय बिन हंसा, जन्म मरण न टरे ॥ ४ ॥

शब्द ४१.

कायापुरा मनसा लेत हिलोर ॥ टेक ॥ लोभ

मोहके बादर छाये. काम करत घन घोर ॥१॥ बरसत बुंद अहं ममताके कडकत क्रोध कठोर ॥२॥ महा अज्ञान अँधियारी छाई,नारी बीज अति जोर ॥३॥पूरन जीय अतिशै भय मानी, ओट गह्यों प्रभुतोर ॥ ४ ॥

शब्द ५२.

जुलम करे तोर टोनवा रे ननँदी॥टेक॥ बिनु जल थलमें बगिया लगवले, विन फूल भँवरा लोभवले॥१॥सूखि नदीमें नाव बहवले, सुरनर मुनिसे खेववले ॥२॥ एक फूंकमें पर्वत उडवले, सिंघसे चरखी उठवले ॥ ३ ॥ विन दूधदहिया आनि जमवले,माखन महीके कढवले ॥ ४ ॥ साध संतके माखन खियवले,छांछ जगतके पियवले५॥दास कबीरके सतलोक पठवले, विन पर पँखिया उडवले ॥ ६ ॥

शब्द ४३.

लीला प्रभु तुम्हारी कहि न जाय ॥ टेक ॥ राईको पर्वत करि डारत, पर्वत राई तुल्य दिखाय ॥ १ ॥ सुर नर मुनि सब खोजत हारे कृपामात्रमें सो परखाय ॥ २ ॥ जो पद इंद्रादिक नहिं पावत, सो पद माहिं दास बैठाय ॥ ३ ॥ साहेब कबीर जीवन सुखदाता, पूरन निज पदमाहिं रहाय ॥ ४ ॥

शब्द ४४.

मिलेहैं दयाल कृतारथ भये हम ॥ टेक ॥ शब्द लखाय कियो प्रभु नेरे, निज करते डारी उरमाल ॥ १ ॥ धोखा दुंद सबै मिटि गयऊ, टूटि गये सब यमके जाल ॥ २ ॥ स्वर्ग मोक्षकी आसा नाहीं पारख पाये भये निहाल ॥ ३ ॥ पूरन प्रकाश और नहिं आसा, साहेब कबीर बन्दि छोर कृपाल ॥ ४ ॥

शब्द ४५.

बिराजत जगमें संत दयाल ॥टेक॥ जिनकी संगति अति सुखदायक, यम डरपत भयमानत काल ॥१॥ दर्शनते सकलो अघ नासत, चरणामृत हरे त्रिबिध ज्वाल ॥ २॥ महाप्रसाद दैन्य सब हारक, कृपामात्रमें करत निहाल ॥ ३॥ तुम्हरी दया पूरन सुख पाये नहिं तो होते बहुत बेहाल ॥ ४ ॥

शब्द ४६.

संत समाज सदा सुखदाई॥टेक॥दुख गंजन भ्रम भंजन समथ परख परखावनको सब साज ॥ १ ॥ दयाशील संतोष सहित प्रभु, धीरज परख भूमिके राज ॥ २ ॥कंठी तिलक बाना सब धारे, डोलत फिरत जीवनके काज ॥३॥ जिनको मिलि पूरन पद पाये, नहिं तो होते बहुत अकाज ॥ ४ ॥

शब्द ४७.

सदा संतनके लागिये पाय ॥टेक॥जो कोई संतकी निंदा करई,सोतो जडा मूलसे जाय॥१॥ शिव विष्णु जेंहिं निसिदिन ध्यावें, तिनकीनिंदा कहां समाय ॥ २॥ सुर नर मुनि औ सकललोक पति, संत द्रोहीको कौनहवाल ॥ ३ ॥ हिरणा कुश रावण औ कंसा, दुर्वासा बहुते पछिताय ॥४॥ पूरन कहत संतनके सन्मुख, हंता कबहुं न करिये भाय ॥ ५ ॥

शब्द ४८.

मेरो मन हर लीन्हो सत्त कबीर ॥ टेक ॥ लोग कहत जग भई है बावरी, कोई न बूझत पीर ॥१॥गावन नाचन कछुवो न भावे, व्याकुल भयो है शरीर॥ २ ॥ बहु विचार केतिक समुझाऊँ, जियरा धरत न धीर ॥ ३ ॥ पूरन सुख प्रभु आप बिराजे, पंच कोशके तीर ॥४॥

शब्द ४९.

मेरो मन हर लीन्हों दीनके दयाल ॥ टेक ॥ काह कहों मोहिं कल न परत है, अंतर होत बेहाल ॥१॥ सुख संपति मोहि कछु न सोहाये लोग कुटुम यमजाल ॥ २ ॥ तनकी सुद बुध सबहिं बिसारी, जब दीन्हों उरमाल ॥३॥पूरन सुखते पूरि रह्यो है, काह करै भ्रम काल ॥४॥

शब्द ५०.

गुणी अवगुणी तो तिहारो हों गुरुजी ॥टेक॥ पुत्र अजान करतहै अवगुण, तोहु पिताको प्यारो ॥१॥ जो मम अवगुण लेखहु साहेब, तो सब विधि हम हारो॥२॥मेहर करो जो दास जानिके तो हमजग निस्तारो ॥ ३ ॥ बिरदकी लाज राख मेरे सतगुरु, पूरन दीन विचारो ॥ ४ ॥

शब्द ५१.

ये तनकी केती असनाई,थोरे दिननमें माटि मिलाई ।।टेक।। जल पृथ्वी मिलि बनो है शरीरा, अग्नि पवन ता मध्य समाई॥१॥शून्य स्वभाव आकाश भरो है तू नहिं जानत चेतन सांई ।।२।। धन संपति छिन भंग सकल जग छिन भंगी सब मान बडाई ।। ३ ।। धृग तिनको जो इनको मानत, पूरन पारखबिन, दुखदाई ।। ४ ।।

शब्द ५२.

जासे प्रीति कीन्ह तुम भारी,सोतो हाडचामकी नारी।। टेक।। जाको शशिमुख कहत बखानी, रारलोर लीबर तहां जानी ।।१।। कनक कलश कविजन जेहि गाई, सो तो गांठि मांस देखाई २ जाहि कविकहे चंपक बेली,सोदुर्गंध मूत्रमलरेली ॥३॥ऊपर उज्वल मृदु वचन सुनाई, मानहु

ठग ठगहारीलाई॥४॥सब जीवनकी बंधन दाता उत्पत कारणकी है माता॥५॥रौरव घोर नर्क भगजानो, हे नर ताको काह सँधानो ॥ ६ ॥ जहांसे उपजो तहां समावो,कसर विकार चीन्ह नहिं पावो ॥७॥ नारिन जीवनको गहि मारी, पूरन परखे होय सुखारी ॥८॥

शब्द ५३.

हमारी लाज तुम्हारे हाथ,गुरुनाथनके नाथ ॥ टेक ॥ खर्ची खुट गई बर्षा आई,देश बुरो गुजरात॥१॥तुम बिन कौन हमारो वाली, जो अब करत सनाथ ॥२॥ तेरो नामको भरोसा मोको,और न कोइ संग साथ॥३॥ लेहु खबर कबीर कृपानिधि, पूरन नावत माथ ॥ ४ ॥

शब्द ५४.

तुम बिन कौन हमारो देश, कठिन कालके

भेस॥टेक॥जोरे मिला सो अपने गरजको,राजा रंक नरेस॥ १ ॥ हमरे तो गुरु तुमहिं अधारा, दीन दयाल परवेस ॥२॥ बेगि खबर लेहू प्रभु आई,दुखित भयो जियरेस ॥ ३ ॥ निजदासन प्रतिपाल करो प्रभु, साहेब कबीर दरवेस ॥४॥

शब्द ५५.

तुम बिन कौन खबर मोरि लेवे ॥टेक॥ देश बिराना कोई न आपन कौन सेवकको सेवे॥ १॥ मेरे तो सतगुरु एक अधारा,जो चाहे सो देवे ॥२॥ ये जग सबही दुंद पसारा; कैसे नवरिया खेवे ॥ ३ ॥ परख बिलास कबीर कृपानिधि पूरन जानत भेवे ॥ ४ ॥

(राग बिलावल)शब्द५६.

तुमहो सत गुरुदातामेरे,मैं अधीन चरणके चेरे ॥टेक॥तुमको माँगे तुमको जाँचे,निशिदिन रहत

चरनके नेरे॥ चरण छाडि अंते नहिं जावे, जैसे मँवर कमलको घेरे॥ १॥ तुमरो ज्ञान ध्यान जप तुम्हरो, तुम तजि और तन नहिं हेरे ॥ जिमि पतिव्रता पतिव्रत ठाने, आज्ञा जोगवे सांझ सबेरे ॥ २ ॥ हरि हर ब्रह्मा आदिक देवा, ऋद्धि सिद्धि दातार घनेरे ॥ हमको नहिं इन सबते काजा एक तुम्हारी दयाके प्रेरे ॥ ३ ॥ बेगि खबर लेहु करुणामय, काहेको अंत लेत प्रभु मेरे ॥तुमहीं जानक तुमहीं मानक, तुम कबीर हो सुखके डेरे ॥ ४ ॥

शब्द ५७.

हजूर करुणामय,नाम तिहारो ॥टेक॥निठुर भये कछु काज न सरि हैं आवत विरदको हारो ॥ १ ॥ जग हँसिहै तब काह बडाई, ताते आयु सँवारो॥ २ ॥ तुम्हरे शरण आयेऊं मैं

साहेब, और न कोई सहारो ॥३॥ साहेब कबीर दया अब कीजे, पूरन आनि पुकारो ॥ ४ ॥

शब्द ५८.

कैसे छाडो दास दसा जगतमें ॥टेक॥ जहां जात तहां निज संग राखेउ, अब किमि भये उदास ॥ १ ॥ जो तुम छाडो निज दासनको रहों मैं काके पास ॥ २ ॥ या जगमें का संग रहे अब, साहेब परख परकास॥३॥ दासपूरणके पूरण संग्रथ, बेगि बुलावो चरण पास ॥ ४ ॥

शब्द ५९.

अब मैं जगसो बहुत डरूं॥ टेक ॥ यह जग मोको नीकन लागे, बिरस तुम बिन गुरू॥१॥ मोकह संग्रथ बेगि बुलावो; इत रहि काह करूं ॥ २ ॥ ये जग मोको फीको लागत, जबतेसंग बिसरूं ॥ ३ ॥ पूरन बन्दी छोर कहावे मम बंधन छोरू ॥ ४ ॥

शब्द ६०.

साहेब अचिंत कबीर, तुम बिनको हरे चिंता ॥टेक॥यह चिंताने सब जग खाये,सुर नर मुनि यति पीर॥ १ ॥ ब्रह्म चिंता खाये ब्रह्मवेत्ता, जैसे मंजारी कीर॥२॥ नारी सब नर खाये जगतके, ताते विकल शरीर ॥ ३ ॥ साहेब कबीर अचिंत सुख पूरन, मेटो शरण दुख भीर॥ ४॥

शब्द ६१.

तुम बिन संग्रथको मम वाली,देखो जगतमें औघट चाली ॥ टेक ॥ जाको मैं अपनो करि जानत, सोई हँसि हँसि करत टवाली॥ १ ॥जो तुम मम मन समुझत नाहीं, किमि समुझावो हरदम ख्याली॥२॥सुखको देखिके होत मेरुसम, दुख देखिके घूसत पाली ॥ ३ ॥ पूरन सुख दुखको दोउ मिटावो, देखो जगत सुख काल दयाली ॥ ४ ॥

शब्द ६२.

कैसन भयोहो निचिंत हो गुरु ॥टेक॥ जोपै निचिंतभये दासनते, कैसे के होईहैं अचिंत ॥१॥ मम मन चिंता होत घनेरे, देखिके जग बिरतंत ॥२॥ ताते हे गुरु चिंता नाशक,पकरों न ठौर एकंत ॥३॥ साहेब कबीर सुख पूरन दाता विनय सुनो कारि तंत ॥ ४ ॥

शब्द ६३.

बिलम न कीजे नाथ अबकछु ॥ टेक ॥ जो तुम बिलम करोगे सम्रथ,तो को मोहि करै सनाथ ॥ १॥ यह देहीमें बहुत दुखपायो,चित चंचलके साथ॥२॥ नैनन निरखिके होत न थिर यह, मैं दुखिया इन साथ ॥ ३ ॥ साहेब कबीर सुख रन संम्रथ, तेरो भव दुख गाथ ॥ ४ ॥

मैं दुखिया हो मैं दुखिया, गुरुमैं ॥ टेक ॥

दुखके दूत लगे हैं निशदिन, तिनमें पांचों विषि या ॥ १ ॥ रूपविषय तो दृष्टिको चाहे, रूप बिहूना दुखिया॥२॥ मीठो रस जिभ्याको चाहे चर्म चहे गादी तकिया ॥ ३ ॥ काम कुटिल कामिनको चाहे, झांके निशिदिन पटिया॥४॥ नाना सुगंध नासिका चाहे, हरदमताकी रसिया ५हंता क्रोध बडाई आये, मैंजाय इनमें गँसिया ॥६॥दास शरण पूरन सुख सम्रथ, साहेब कबीर करो सुखिया ॥ ७ ॥

शब्द ६४.

बरसत बदरा बूंदन साधो बरसत ॥ टेक ॥ ज्ञान प्रकाशको कियो है अच्छादन,माया चमके कून्दन ॥१॥ गुरुवा मोर भये सब उनमत, लागे जीवन खूंदन ॥ २ ॥नाना शब्द सुनावत हरदम, सुनि सुनि लागे ऊंघन ॥३॥ ऐसी बर्षा बर्षतहै जग , सब घट कीन्हे रूंधन ॥ ४ ॥ सबहिनके

जीवहोय शीतल, दुगदुग निशिदिन सूझन॥५॥ साहेब कबीर पूरण सुख सम्रथ, दास शरण सुख सूकन ॥ ६ ॥

शब्द ६५.

ऐसी कसनी सही नहिं जाय गुरुजी ॥ टेक॥ मम बुद्धि है अतिसै अधीरज, देखि देखि जियरहे पछताय ॥ १ ॥ तुमही वचन कह्यो निज मुखते तामें तो कछु अजु न दिखाय ॥ २ ॥ हरदम मैं झगरत था तुमसों; आपही आवतलेत समुझाय ॥ ३ ॥ अब मोपै तुम कैसेके रूठे; पूरन मनोरथ पुरवहु आय ॥ ४ ॥

शब्दावली ६६.

मम मनसा कौन पुरावेगो ॥ टेक ॥ जित तित जीव हँसत हैं मनमें;तिनको बाहर हँसावेगो ॥ १ ॥ जब हँसि है तब काह रहेगी, जो दासन लाज गँवावेगो ॥ २ ॥ लाज गई तब काह बडाई; फिर दुख बीते धावेगो ॥ ३ ॥ अनेक

काज किये दासनको, मोहि अहित देखावेगो ॥ ॥४॥ जो पत्नीकी लाज लेई कोई तो पतिपन कैसे रहावेगो ॥ ५॥ सबही लोग वाकी करत ठठोली, नाम पतिके ले गावेगो ॥६॥ दास शरणके पूरन सुखघन, संकट मिट सुख पावेगो॥७॥

शब्द ६७.

ये मन क्यों नहिं थीर रहे ॥टेक॥ ये जग दुख सुखरूप नदिया तट, दोऊ कठिन अहै॥ १ ॥ मान अमान मीन जल भीतर, मोह प्रवाह वहे ॥ २॥ कबहुँ जाय बसे सुख तटकर, कबहुंक दुखको गहे ॥ ३ ॥सुख तट तो बहु नीको लागे, दुखको कौन चहे ॥ ४ ॥ मान मिले तो बहुत सुख लागे, देखि अमान दहे॥५॥ तू तो समुझत है नहिं याको, जो गुरुमुख वचन कहे ॥ ॥ ६ ॥ गुरुमुख वचनकहो निशि वासर, कर

उपकार मोहे ॥ ७ ॥ साहेब कबीर पूरन सुख मिलि रहो, दुख सुख फिरि न दहे ॥ ८ ॥

शब्द ६८.

है तेरा तुझमाहीं, निरखि क्यों न देखुरे भाई॥ ॥टेक॥ स्थूलमें तूही सूक्ष्ममें तूही, कारण तूही समाई॥ महाकारणमें तूहि विराजे, केवल तूही देखाई॥ १॥ तू तू करते तूहि भुलाना, तेरि खबर नहिं पाई ॥ सुरझनको जो युक्ति बनावे, त्योंत्यों उरझत जाई ॥२॥ चारि वेद षट् शास्त्र अष्टदश सबमिलि एक निकाई ॥ ब्रह्मसे जगत जगतसे ब्रह्म है, पुनि सब आपु कहाई ॥३ ॥ ये सब तेरी भास कहावे, तूहि सांच है भाई ॥ परख कबीर पारख पद पायो दया पूरन समाई ॥ ४ ॥

शब्द ६९.

तेरो नाम है दीनदयाल सही, सो तो मोहि तारोगे॥ टेक॥ तुम सब लायक हंसन नायक, जीवन

करत उबार ॥ बन्दी छोर बिरद अति भारी, जो प्रभु लीन्ह उबार ॥ १ ॥ मैं अति दीन हीन निज कर्मन, सुमिरत नाम तुम्हार ॥ तुव पद तजि अंते नहिं जावों, यह निश्चय उरधार॥ २॥ पतितन तारे कष्ट निवारे, तोरे यमके जार ॥ परख परखाय अनेक सुधारे, हंस उतारे भव पार ॥ ३॥ साहेब कबीर धीर सुख दाता, तुम हो गरीब निवाज ॥ पूरनदास शरण निज आयो, बाँह गहेकी लाज ॥ ४ ॥

शब्द ७०.

सबके जनैयाको काह जनैये, जानतहीं सकलो सुख पैये॥ टेक ॥ तनकी मनकी सकल लोककी, जाननहारसो काह छिपैये ॥ निर्मल संगति करहु संतकी, निर्मल ह्वैके निर्मल समैये॥ ॥ १॥ जो जागततिहुँ लोक रैन दिन, ता साहेब को काह जगैये ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया,

तुर्यातीत नहिं जहां पैये ॥२॥ बाच लक्ष मनकी चतुराई, जहां नहिं तहां कैसेके पैये ॥ बिन परखे कछु जानि परे नहीं, उनकी कृपा बिन परख न पैये ॥ ३ ॥ हौं लाचार सकल विधि साहेब, बिनय करों ताको चित लैये॥सुख स्वरूप कबीर कृपानिधि, पूरनको मन ना भरमैये ॥ ४ ॥

शब्द ७१.

बेगि खबरिया गुरु लीजो, हे प्रभु दीनदयाल॥ ॥टेक॥ आनि परेउ परदेशमें, देखे यमके जाल॥ यहां न कोई आपनो, तुम बिना रछपाल ॥१॥ मो हितो अधार तेरो नामका, हो दासन प्रतिपाल॥ अब कछु बिलम न कीजिये, जीव भयोहै बेहाल॥ ॥२॥ गुणी अवगुणी कैसो आहिपर, तेरोई कहावत बाल ॥ जो तुम खबर न लेहुगे, तो मम कौन हवाल ॥ ३ ॥साहेब कबीर सुखके रासी,

हो करुणाके आल॥ सुनियो अरज निज दासकी, अब करिये निहाल ॥ ४ ॥

शब्द ७२.

अपने हम भोगे निज भोग॥टेक॥जानि बूझि कस अंत लेत हो, ये नहिं तुमको योग ॥ १ ॥ जगमें दास कहाय तुम्हारो,लाग्यो भवको रोग ॥ २ ॥अस सम्रथके शरण आयके,छूट्यो नहीं मम सोग ॥३॥ साहेब कबीर बिरदके पालक, हँसन लगेंगे लोग ॥ ४ ॥

शब्द ७३.

धन्य धन्य भाग जाके, साधु आये पांहुना ॥टेक॥प्रेम प्रीति गंगोदक लेके,चरणपखारना॥ चित चंदन चोवा अति उत्तम,अंगमें लगावना १ बहुविचार नानाविधि व्यंजन,भोगहुलगावना॥ महाप्रसाद उनहीको पायके, आपहू अघावना ॥ २ ॥ सरधाभक्ति पुष्पकी माला, गरे

पहिरावना ॥ दोऊ कर जोरी अस्तुति करिये, पुनि मस्तक नवावना॥ ३॥ पूरण प्रकाश कबीर गुरु पाये, दूजी नहिं भावना ॥ निरखि परखि सत्संगति करना, जग बहुरि नहिं आवना॥ ४॥

शब्द ७४.

तुम्हारे इश्कने मुझे दिवाना बनाया ॥टेक॥ नैनाकी सैन करके मुझे नजीक बुलाया॥ पकडा जो मेरा हाथ ले कानोंसे लगाया॥ १॥ मस्तक पर धरा हाथ मुझे शब्द सुनाया॥ तिनका दे मेरे हाथमें दुश्मनसे बचाया ॥ २ ॥ पानोंका बीडा दे छतियोंसे लगाया ॥ दास पूरन आशक चरणोंमें समाया ॥ ३ ॥

शब्द ७५.

सत शरण गहो सार अहोनर ॥ टेक ॥ भव करता भ्रमहारक सम्रथ, तोकह लेहिं उबार ॥ १॥ कहां अरुझो तुम विषय फन्दमें, जन्म धरिसि

बहुवार ॥ २ ॥ जहांसे उपज्यो तहां बंधायो, तोहि न लाज गंवार ॥ ३ ॥ संत शरण पूरण पद पायो, तेरी माया जार ॥ ४ ॥

शब्द ७६.

झूठ पसारा छोडो, मानो हमारी बात। ना कोई आया, ना कोई जावे साथ ॥ टेक ॥कहांके भाइबंद, औ कहांके गोत नात ॥ कहांके संग साथी, औ कहांके कुलजात ॥१॥ सुनि सुनि दूरकी बाते, क्यों होता गफिलात ॥अपनेसे भ्रम उठता, फिर आपहीको खात ॥ २ ॥ माया मोहके फन्दमें, नाहक फन्दा जात ॥ यों बेहोस होगये, फिरि यम मारै लात॥ ३ ॥ पूरन अजीज कहते, कर जोरी बहु भांत ॥ साहेबकी शरण जाना, जो पारखकी जात ॥४॥

(राग मेघमलार) शब्द ७७.

केवट सुनहु हमार, पियाको मिलन कैसेहोय

॥टेक॥ एक तो अकेली परदेशमें, कोई न संग हमार ॥ नदिया अपर्वल बाटमें, गंगाजमुना दुइ धार ॥ १ ॥ नैय्या पुरानी झांजरी, पवन चले बिकरार॥ चहुँदिशि छाई है बादरी, चमके बिजुली अपार ॥२ ॥ मलाह चतुर सुजानहो, मैं तो भई लाचार ॥ जेहि विधि तुमका समुझि है, खेइ लगावहु पार ॥ ३ ॥ खेवत विवेक विचारते, सत्य भई पतवार ॥ पूरन नावमें बैठिया, साहेब कबीर कंडिहार ॥ ४ ॥

शब्द ७८.

यहि विधि परम पद पाइये, हंसा सुनो हमार ॥टेक॥ आनि फसी परदेशमें, यह तो भूल तुम्हार ॥जोरे मिले उस देशका, तासों करौ चिन्हार ॥१॥ सारशब्द निज मंत्र है, थंभन करे दुइ धार ॥ नैय्याको भार न लागे, शांत होइहै बयार ॥२ ॥ भर्मकी उडी है बादरी, पारख

करहु विचार ॥ बीज बिलाने आकाशमें, परख परी टकसार॥ ३॥ पूरन पाखर एक नित्यहै रख मिथ्या सब संसार ॥ निर्भय होय रहो दासमें, कहहिं कबीर विचार ॥ ४ ॥

शब्द ७९.

मोहि कैसे कै पार लगावोगे ॥टेक॥ यह भव नदिया महा दुखकारी, क्या डूबे बाद तिरावोगे॥ १॥ जित तित सब करत ठठोली, क्या भेश की हँसी करावोगे॥ २॥ मैं तो भरोसे तुम्हारे साहेब दुष्टन मारि भगावोगे ॥ ३ ॥ जो दुष्टन सासत नहिं देहो, तो मम लाज गमावोगे॥ ४ ॥ लाज गई सेवक की जाकी, तो साहेब जगमें लजावोगे दास शरणके पूरण सुखवन, कालकी भीर भजावोगे ॥ ६ ॥

शब्द ८०.

दीननके हो दयाल, दया जननपै करो॥ शरण

आयेकी लाज गई, प्रभु जनि करो॥टेक ॥ दशहु धार बिकार धार,नौका बहे॥सुरत नहीं ठहराय, लगन कैसे लगे ॥ १ पांच तत्व गुण तीनि; साज सब साजिया ॥ यामें रहे भुलाय, तो फन्दन फन्दिया ॥ २ ॥ त्रिगुण मायाके फन्द, फन्दो जीव आयके, गहु साधुनको संग, गुरुन लव लायके ॥ ३ ॥मोक्ष मुक्ति जब होय, दया दिल आवई ॥ परन पूरन करिदेव, महा सुख पावई॥४॥साहेब कबीर बन्दी छोर, अरज एक मानिये ॥ हमसे अधम उधारि, शरण प्रभु राखिये ॥ ५ ॥

(हिंडोला) शब्द ८१.

राजा मनके अंगना, बिनवत हैं करजोर॥बाहर जान न देउंगी, घरहि रचो हिंडोल ॥ टेक ॥ विवेक बैराग के खंभला, धीरज डांडी है जोर॥ बैठ दयाकी पाटरी, लाय विचारकी डोर ॥ १॥

शील बानी मुख गाइये, हम तुम मिलि एकठौर॥ ॥२॥दुर्मति दूर बहाइये, भूमि सांचके ठौर ॥३॥ नारी बन नहिं हेरिये, वहां वसत एक चोर ॥ पुहुप धनुषकर लीन्हे हो, पांच बाण बरजोर ॥ ४ ॥ कोई बांचन नहिं पावहीं, जियरा डर-पत मोर ॥ पूरन याते घर रहो, मानहु बिनती मोर ॥ ५ ॥

(रेखता) शब्द ८२.

तुम बिन कौन है मेरा। भटकी बहु देशमें हेरा॥ दिसे न दूसरा कोई। उमिर सब भर्ममें खोई ॥टेक ॥ है कोई संत विवेकी। परख निज होय भय देखी॥ गुरु विन कौन जगमांही। कोछोडावे जो पकर बांही ॥ १ ॥ शब्दमें सार परखाई। दियो सब भर्म सरकाई ॥ कल्पना खंडकै तोरी प्रीति निज रूपसे जोरी ॥ २ ॥ सबै अध्यास नीवारी। किया उपदेश बैठारी। परख निज

भेद बतलाया । तब मैं चरण को पाया ॥ ३ ॥ कबीर सुखनिधि सुखवानी । जाने कोई शूरमा प्राणी । पूरन सब परखकी रासी । नहिं जहां झांईकी गाँसी ॥ ४ ॥

(रेखता) शब्द ८३.

सुनो हो संत जन भाई, भूल यह कहांते आई ॥टेक॥ पहिले आपही भूला। मगन निज रूपमें फूला॥ तहांते झांई भई ठाढी । व्याधि ये जहांते बाढी ॥ १ ॥ इच्छारूप नारि उपजाया ॥ पुत्र तहां तीन निरमाया ॥ तहांते सकल संसारा । भयो बहु दुःखको भारा॥ २॥ बहुत दुख जीवको भयऊ ।तबै अनुमान एक कियऊ॥ कर्ता ब्रह्म भजे दुख जाय । कोई एक आपुहि कहलाय ॥ ३॥ कोई एक न्यारा अनुमाने। सकल मिलि आपमें साने। बढी हैं वानीकी धुंधी। ताहिमें भई जगत अंधी ॥ ४ ॥ कहत पूरण सो विचारे। मिले

मुखलाल जबै प्यारे। लखाई भर्मकी फांसी॥
किया है पर्वमें वासी॥६॥

गज्जलशब्द ८४.

जिन्हेंलिया फकीरी सब छोडकेदिलगिरी,उ को
मिली अमीरी। बरबाद हुवा तो क्या हुवा॥ ॥
॥टेक॥छोडिहै जुआकी सीरी।वो बनरहे अकसी-
री। उनको मिलीहै न्यामत।टुकडे मिलेतो क्या
हुवा॥२॥किया तर्क खुदाई।नहि चाहे बादशाई॥
उनको दिये खजाने। कौडी दिये तो क्या हुवा३
कुछ हिर्स ना रहिहै। सोहबत सबै गई है। यह
मिलाहै उनको। कुल मिलातो क्याहुवा॥४॥
पूरन अरज यही है। कुछ गर्जना रहीहै। साम्रथ
हुवा तो क्या हुवा।लाहचार हूँ तों क्या हुआ५

(होरी) शब्द ८५.

कैसी मजा करडारी होरीको खेलारी॥टेक॥
भारी भर्मकी सारी जो कारी मानकी बेसर टारी।

लोभ मोहके कँगना फोरें, प्रेमके रंग बहोरी॥ १॥
ज्ञान गुलाल परो नैननमें, दिसत नहीं जगसारी ।
त्रिगुण तनी अँगियाकी टूटी, शब्द कुमकुमामारी
॥२॥ नित्य अनित्य देत है गारी, लाज शरम
सब टारी। एके भाव विलास करत है, कौन पुरुष
कौन नारी॥३॥ पूरन अति मन भूलि गयोहै,
ऐसी न देखि धमारी । साहेब कबीर परख रंग
रँगिया, खैंचिके कीन्ह निनारी ॥ ४ ॥

(होरी) शब्द ८६.

कायानगरपुर कोरे वसैया, कित गयो हो होरी
के खेलैया ॥टेक॥ आगे आगे वाकी माता जो
रोवे, पीछेपीछे वाको भैया । पलौ पकरि वाकी
त्रिया जो रोवै छाडि चले सुख शय्या ॥ १ ॥
जोरे कहै हम संग चलेंगे, अंतकाल पछतैया ॥
जो तनमें चंदन चर्चतथे सो तन धूर उडैया २
हाथी घोडा बैल बाहनू, बहुतक द्रव्य जतैया।

लोग कुटुम सब लूटन लागे, हंस अकेला गइया॥ ३॥ईजग सबहोरी खेलन लागे, काहु न चेत फरैया ॥गुरु कबीर कृपा बिन पूरन, ईजग सब दुख दइया ॥ ४ ॥

(होरी) शब्द ८७.

होरीको खेलन दिनचार भयोरी।केतिक कहों गुरु बहोत कह्योरी ॥टेक॥ घटकी मटकी पटकी जाने, जान अजानसो आयु भयोरी ॥१॥निज भूल घटाकी छटामें अरुझो,ताते बहुते दुख सहोरी ॥२ ॥ गुरु पारख बिन पार न पावे, सरिता सम जिय जात बहोरी ॥३॥ पूरन सुख परताप संतके सीप बुंदगत परख भयोरी ॥४ ॥

(होरी) शब्द ८८.

येहो याही बसंत मेरो यही फाग, आज पिया जीसे भेट भई ॥टेक॥ पियाजीके अरस परस सुख पाये, बाढ़ीहै प्रीति नई॥ १॥ बहुत दिनन-

से ढूंढत डोली, खोजत हारि रही ॥२॥ अबकी बेर पियापाय सखीरी; सो सुख कासे कही॥३॥ साहेब कबीर अभय रंग रंगी, सुरतिको खैंच लई ॥ ४ ॥

(होरी) शब्द ८९.

दीन उधारन प्रभुको छांड अब;कासो खेलों रंग ॥ टेक ॥ सुरत निरत एक ठौर भई है, कबहुं न होवे भंग ॥ १ ॥ प्रेम फोहारा छूटन लागे, दिन दिन बाढ़े उमंग ॥ २ ॥ ज्ञान गुलाल उडावो सखीरी, भेटो प्रभुके अंग ॥३॥ परख प्रकाश कबीर कृपानिधि, छबि निरखत भई दंग ॥ ४ ॥

(होरी धमार) शब्द ९०.

शब्दकी धुन मेरे श्रवण परीरी, जियरा बसि भयो वाहि घरीरी॥टेक॥ज्ञान गुलाल उडन जब लागे, विवेक पिचकारि भरीरी॥ १॥ प्रेम फोहारा

विराग कुमकुमा, देह नगरमें धूम परी री॥ २॥ काम क्रोध बीरनदोउ भागे, आशा तृष्णा ससियां भरो री॥३॥ साहेब कबीर तुम चतुर खेलारी, मैं लाचार कर जोरि खडी री॥४॥

(होरी)शब्द ९१.

ये मन निपट अनारी, होरी खेल न जाने॥ ॥ टेक॥ काम क्रोध मद लोभ मोहकी, शिरपर गागरं भारी॥इनको छाड पिया संग खेलो, बात सुधरगई सारी ॥ १॥ सुमति सखी संग होरी खेलो, कुमति सखी रहि न्यारी॥ कहहिं कबीर मगन भई बिरहिन, हाथ प्रेम पिचकारी॥ २॥

चौबोला- पारखसबको परखत है, पुनि पारखको को परखनहारा॥ सत चत आनंद और महानँद; पारख सबको कीन्ह निबेरा॥ बडे बडे अनुभवीके कर्त्ता, विन पारख कस कीन्ह विचारा

पूरनदास कहैं सुनु ज्ञानी, निज पारखते भया निन्यारा ॥९२॥

सवैय्या–जैसे कछुक दिन, संगति कीन्ही जोहरीकी, परखत नग हीरा, परख ताहुको पाई है ॥ परखे बहु लाल, नग लीलमके जाल हीरा पन्ना जंगाल, पोखराज औ राई है॥ परखि परखि डारे बहु, सांचे और झूठेको, कहु पारख ना जाय, निजुके ठहराई है ॥पूरन कहत विचार, ऐसा गुरुपद निहार, कहूँ तोहि बारम्बार, जो कछु अधिकाई है ॥ रजोगुण लाल, सतोगुण हीरा तमो जाल सोई, लीलम है ॥ शुद्ध सतोगुण, पन्ना कहिये, कूटस्थ औ तुरीलं है ॥ पोखराज सोई, केवल जानो, तत् त्वंमिलि, असि निर्गुण है ॥ मन राई औ, देह नर्गना, पूरन परखो, इ गुण है ॥ रजोगुण कर्मकांड बतलावे, उपासनाकांड सतोगुण है ॥ तमोजाल योगीको

जानो; ज्ञानी शुद्ध सतोगुण है ॥ विज्ञान सो केवल जानो, दोउ रंग सम कीलं है ॥ मूढराई औ डिम नगीना, पूरन परख सखीलं है॥ ऐसा सकल जौहरी परखे, सोई जौहरी अच्छा है ॥ कसर खोट सबही की जानें, सोई पारखी सच्चा है॥ गुम सुम होयके अटक रहेगा, सो ना मर्दा कच्चा है ॥ रती रती निरुवार करे सोई, पूरन गुरुका बच्चा है ॥ ९३ ॥

साखी-जोगी रोगी भक्त बावरा, ज्ञानी फिरे निखट्टू ॥ संसारीको चैन नहीं है, ज्यों सराई-का तट्टू ॥ १ ॥

इतिशब्दावली पूरणसाहेवकृत गुरुदयासे सम्पूर्ण ॥

अथ संझापाठ ।

गुरुस्तुति

दोहा--नमो नमो गुरु देवजू, साधु स्वरूपीदेव।
आदि अंत गुण कालके,जाननहारे भेव॥१॥
सोरठा-मेटेउकालकोजाल,ताते गुरु तुवनामयह।
बन्दीछोर दयाल, अशरण शरण उदार अति२॥

चौपाई--दीनबन्धु करुणामय सागर ॥ हंस उधारण तारण आगर ॥ दीनानाथ शरण सुखदाई ॥ अभय तासु पद गुरु समराई ॥ बन्दीछोर बिरद अति तासू । हंसरूप परगट जगजासू ॥ अधम उधारण तारण स्वामी ॥ परवर दिगार मालिक अनुगामी॥ काल जालके मेटनहारे।बिरद लाज राखन पति प्यारे ॥ धीरज दया

तत्व संयुक्ता॥ राम भूमिका बासत युक्ता॥ चिंता रहित अचिंत गोसांई ॥ परमरूप परकाशकसांई अखिल ब्रह्मांडके जाननहारे ॥ कर्ता नामप्रगट विस्तारे ॥ निष्कामी माया परचंडा ॥ ताको नासक पूर्ण ब्रह्मंडा ॥ मंगल रूप गोसांई आपू॥ जगत विदित पूरण परितापू ॥ साहेब निर्भय पद दातारा॥ कर्ता पुरुष सबनके पारा ॥ महा मोह दलनाशक स्वामी ॥ हंसन नाह अपार अगामी ॥ आनंद सिंधु अहंतातीता ॥ रामरूपमें परम पुनीता ॥ सत्य यथारथ अतिप्रिय साधू ॥ मन मायाको मेटेउ व्याजू॥ पूजनीय अनुमान विनासिक ॥ सत्य सुकृत प्रकाश प्रकाशिक ॥ नाम मुनिंद्रसबन सुखदाई॥ बारम्बार कहों गोहराई॥ सत्य सिंधु प्रभु दीन दयाला॥ नाशक अनुमय सहज कृपाला॥ आपु जीव निःकर्म निधाना ॥ शब्दी अजरअकाल समजाना॥ साधुरूप पूरण पर

माना ॥ गरिब निवाज गहहु गुरुज्ञाना॥ झोईशब्द परखावनहारे ॥ तारण तरण बिगत सम्भारे ॥ मन अनुमान गुमान विनाशिक ॥ मोदप्रत्यक्ष दाननिज दासिक ॥ वेदकुरान बुझावे यथारथ ॥ मन क्रम वचन साधुमें स्वारथ ॥ इति सतनाम गुरू गनि आई॥सब वृत्तांत मुरुमुख जो बुझाई॥ साधुगुरु कबीर गोसांई ॥ बन्दीछोर नाम जपु गाई ॥ ३ ॥

दोहा–गुरुके अमृत बचन सुनि,शिष्य श्रवण मन देय ॥ झांईसंधि औ काल गुण, तुरित मिटे नहिं लेय ॥ ४ ॥

छन्द–तुम होहु जाहि दयाल । सकलोजाल ताकर नासि हो ॥ तुम बिना न मिटिहैं काल । सुकृत पाल परख प्रकाशि हो ॥ का करों मैं अस्तुति आज सतगुरु । कियो बहुत उपकार हो ॥ तुम बन्दीछोर कबीर साहेब । मेटिया भव

भार हो ॥ सब करों निछावर तोर परम गुरु। तन मन धन सब खेह हो ॥ मम सुरति राखो चरणमें। यह नाशमान है देह हो ॥ परख पदको पाय साहेब। मेटि गयो सब भास हो॥ ब्रह्मजगत अनेक बानी। रही न काहूकी आस हो ॥५॥ सोरठा शरणशरणगुरुराय, बहुतसुखीमोकोकियो पूरन बंदत पाय, सब अपराध छिमाकरो ॥६॥ दोहा-मैंनालायकप्रश्नकियो,तुमसमुझायउमोहिं मोसे बोलत नाबन्यो, छिमाकरो प्रभु सोहि७॥

छन्द-समुझिदेखुचित्त त्यागि,नास्तिसुखजो अनित्य पागि, गुरु चरणन करु संगति, संत साधुकी॥हो मिस्कीन,राखु निश्चयआकीन,तूतो जमापद बाकी,खर्च काहे अबादकी॥मनमनसा दोऊलौंडि,निकारिडारो,मारोहंकारतृष्णाकुबुद्धि कुवादकी॥रूप हंस धार, ठहरि कीजिये विचार यार बफादार दीनानाथ,दीनबंधु गुरु साधुकी ८

॥ शब्द अष्टपदी ॥

प्रभुजी तुम विन कौन छुडावे ॥महा कठिन यम जाल फांस है,तासों कौनबचावे॥१॥ नाना फाँस फँसाय जीवको, अपनो रूप छिपावे॥पंच कोश ह्वै परगट ग्रासे,तेहिको कौन लखावे॥२॥ आपुहि एक अनेक कहावे, त्रिविधि रूपबनावे सैन पाठ होय दुष्ट नष्ट सो,परलय अंत देखावे॥ ॥३॥ विषय विकार जगत अरुझावे, जहां तहां भटकावे ॥ योग ध्यान विगुर्चन भारी, ताहि सुरति अटकावे ॥४॥ आस नाम नौका बैठावे, भवके धार बहावे॥तत्त्वमसी कहि ताहि डुबावे, अंत कोइ नहिं पावे ॥ ५॥ चारि मुक्ति जो इनि चौरासी, तेहि मिलि हेतु बढावे॥ नेम धर्म पूजा औ सजम, बहुविधि लागि लगावे ॥६ ॥ भेष अलेख करे को पावै, जीवहि चैन न आवे ॥ चारि वेद षट अष्टदशों ले,शून्यहि शून्यसमावे

॥ ७ ॥ काल चक बसि उत्पत्ति परलय, जीव दुसह दुख पावे ॥ साहेब दया कीन्ह परखाये, रामरहस गुण गावे ॥८॥ ९॥

दोहा-सुख साहेब सुखरूप जो, हरन कालके पीर॥ जो जन आवे शरणमें, परखि लगायेउ तीर १०॥

करुणार्णव कृपाल गुरु, सुखनिधान दुखभूर ॥ बन्दीछोर अशरण शरण, परख प्रकाश निजमूर ॥ ११॥ जीवनके दुख मेटिया, परखाये सब जाल॥ताते गुरु तुम नाम यह, बन्दीछोर दया-ल॥ १२॥ अशरण शरण नाम तुव, बरणतहैं सब संत ॥ ताते गुरु न विसारिये, परखायो जीव भ्रांत ॥ १३ ॥ जो गुरु बसे बनारसी, शिष्य समुन्दर तीर॥ बिसराये बिसरै नहीं, जो गुण होय शरीर ॥ १४॥ गुरु उपमा क्या दीजिये, पटतर नाहीं कोय ॥ पलक पलक करों बंदगी, छिन छिन निरखों सोय ॥ १५ ॥ जो तू चाहे मुझको,

छाड सकलकी आस ॥ मुझही ऐसा ह्वै रहो, सब सुख तेरे पास ॥ १६ ॥ साहेब दीनदयाल गुरु, सो पर और न कोय ॥ शरण आय यमसे बचे, आवागवन न होय ॥ १७ ॥ दयाकरन अवगुणहरण, तारण तरण उदार ॥ अशरण शरण बन्दों चरण, तुम विन नहिं निस्तार॥ १८॥ देखि अधमता आपनी, परवश यमके हाथ॥ त्रसित गहेऊं साहेब शरण, भवभय हारि सनाथ ॥ १९ ॥ प्रभु सब लायक पारखी, हौं भर्मिक अज्ञान॥ लोह कनक पारस करे, साहेब शरण समान ॥ २० ॥ बन्दों चरण सब दुख हरण, प्रभु प्रसाद दुख भूरि ॥ दयाकरी दुख सब हरी, संसृति शूल भौ दूरि ॥ २१ ॥ बहेबहाये जात थे, भव सागरके माहिं ॥ दयाकरी परखाय सब, शरणाये गहि बाहिं ॥ २२ ॥ संतत अभय गुरुके चरण; सदा परख परकास ॥ शमन सबै भव जाल तम, रामरहस सुखबास ॥ २३॥ सर्वोपरि

गुरुके चरण, जो हारी भव खेद ॥ परम उदार सागर दया थाह न पावे वेद ॥ २४ ॥ चारि वेद जग विदित हैं, ब्रह्मा कीन्ह प्रकास ॥ चारि रूपसो जानिये, चारि अवस्था भास ॥ २५ ॥ भास मिटावे जीवको, काटे यमके फंद॥ साहेब दीनदयाल गुरु, संशय खंडे दुंद ॥ २६ ॥

छंद–साहेब स्वतः प्रकाश पारख । त्रास नहीं यम दंडके ॥ बास शरण बिलास तजि । सब आश पिंड ब्रह्मांडके ॥ गांस फांस मिटाय दास । हुलास ज्ञान अखंडके ॥ नहिं नाश ते इतिहास सुनि । सो आदि अंत प्रचंडके ॥ यम हंत एक अनंत । तेहिके फांस बहु वर्णतके ॥ बहु जंत गाई हरंत । कूप पतंत बहुते गनंतके ॥ सब दास होई रहंत।दुष्ट परंत चीन्ह न कंतके ॥ आदि अंत जे सुनहि संत।नहिं धावहि सो बेअंतके ॥ जीव हाल जीन्ह बेहाल । काल कराल सुनि

अवजालके ॥ उरसाल अनेकन्हि भाल । सो बाचाल कवितन गालके ॥ तेहि टाल डाल प्रचंड होहु। निहाल नाल कृपालके ॥ लहु परख माला माल भेटि। भव जाल शरण दयालके॥यह बुदबुदा जों शरीर । नीर न थीर झूठाहीरके ॥ परपंच बहु ततवीर । तेहिके बीर उवरे हीरके ॥ तजुललनि कीर फकीर।जेहि डर नहिं डजिर अमीरके॥गुरु पीर हरें भवभीर । अभय गंभीर शरण कबीरके ॥ नारदादि शुकादि दै । ब्रह्मादि सब जेहि गावहीं ॥ गाई धाई हेराई । बारम्बार मन पछतावहीं ॥ जस जस जतन छूटन करहीं।भव बूडे थाह न पावहीं ॥ सोई धार कठिन अंधार । ते गहिं पार पारख लावहीं ॥ २७ ॥

दोहा–संतत सुखहै पार्खमें,साधन जतन बिनास।
भूलिभटकिमतिजाहुजिय,विविध कर्मके फांस ॥

अर्जनामा अष्टक--हौं सेवक अज्ञान मोपर।

दया दृष्टि निहारिये॥बाल जानि कृपालु मोको सुरतिसे नहिं टारिये ॥ १ ॥ हौं निपट बुद्धि मलीन। जगत आधीन मैं ताते भयो ॥ जो होय तुव पद लीन सोई। बिपिन मन काहे न रह्यो ॥ २ ॥ यह जगत जाल कराल। मोह विशाल मोहि अछो लग्यो ॥ यह कनक कामिनि नाल देखि। बैराग सब चितसे भग्यो ॥ ३ ॥ नहि काम हैं धन धाम।सब बेकाम सपनासो दिखे ॥ पर चित छाडत नाहिं आसा। काह भये बहु पढ लिखे॥ ४ ॥अब करत दास पुकार,बारम्बार गुरु सुन लीजिये ॥तुम सकल राग छुडाय।दृढ बैराग मोको दीजिये ॥ ५ ॥ तुव नाम पतित उधार, मोते न पार कोई दीन है ॥ अब बन्यो है जुग यार। तुव आधार ताते कीन्ह है ॥ ६ ॥ बानेकी लाज तुम्हारि।परख विहारी सुख साहेब धनी ॥ मैं पतित हौं लाचार ॥ दास तुम्हार

गुरु साहेब गनी ॥ ७ ॥ अब दास पूरन कीन्ह बिनती। सुनहु दीन उधारणा ॥ मैं परचो हौं जग जंजाल माहीं । मोहि साहेब तारणा ॥८॥२९॥

अष्टक—सुख साहेब सुखरूप सुखघन; सदुह दुख निवारणं॥पारखके प्रकाश कर्ता दीन जीव तारणं ॥ १ ॥ यह ब्रह्म जगको शोक सकलो धोख धर्म बिडारणं॥महा मोह कराल नाशक सकल भव भय हारणं ॥ २ ॥ यह वेद शास्त्र पुराण एक, अनेक जालहि खंडनं ॥ झांई संधि औ काल भासिक, दया धीरज मंडणं ॥ ३ ॥ एक जीवको अनुमान; सब तोफान जग तामें फँसो ॥ सोई गांस फांस छुडाय, निज पद पाय पारख दृढ ठसो॥४॥नहिं कल्पना अनुमान,सो परमाण अब को कहि सके ॥ न प्रत्यक्ष पारख छोडिके, यह वेद नाहक मरि बके ॥ ५ ॥ सोई लोहु आप कृपाल; तब सब जाल जीवन छूटि

हैं॥ निज दास होय हुलास, तबहीं भास सकलो टूटिहैं॥६॥ मैं चरण सेवक दीन, तुम परवीण दाया कीन्ह हो॥ मैं हीन छीन मलीन प्रभुजी, बाँह गहिके लीन्ह हो॥७॥ बाँह गहेकी लाज पूरन, शरन तुमको आज है॥ नहिं औरसे कछु काज, गुरुपद सकल सुखको साजहै॥ ८॥३०॥

अष्टक॥ भो दयाल जगत पाल, कालजाल खंडनं॥ पाप ताप दहनहार दिव्य ज्ञान मंडनं॥ भवापार कर्णधार, पाकनाम अंकजं॥ चरण शरण देहिमे, नमामि पाद पंकजं॥ १॥ सत्त प्रकाश चिदाभास, नाम रूप अक्षकं॥ जगत ब्रह्म आत्म सर्व, साक्षी आदि लक्षकं॥ दया धीर युक्त जोग, विशुद्ध नाम अंकजं॥ चरण शरण०॥ २॥ हंसभूप परमरूप, भुक्ति मुक्ति दायकं॥ दक्ष मक्ष रक्ष प्रभु, सर्व संत नायकं॥ परीक्ष अक्ष निर्मलं, विशुद्ध नाम अंकजं॥ चरण शरण०॥ ३॥ बिरह कलोल ब्रह्म गोल, तत्वमसि

छेदिक॥वेद विद्यातीत त्वं, चतुर स्थान भेदिक॥ स्वयं अक्षि साधु पक्षि, शुद्ध नाम अंकजं॥चरण शरण०॥४॥ परख भान संत ध्यान, षड पुटी बिनाशिकं॥ आदि अंत मध्यनाना, नेति भास भासिकं॥ कृपासिंधु शील इन्दु, विशुद्ध नाम अंकजं॥चरण शरण देहिमें,नमामि पाद० ॥५॥ विश्व चित्र तासु मित्र,तत्पवित्र शासनं॥ शुचि पवित्र त्वं विचित्र, सार शब्द भाषनं॥ करुणा मय कबीर औ,विशुद्धनाम अंकजं।चरण शरण० ॥६॥जोगजीत भौ अजीत,न्याय नीति कारणं॥ ऋद्धि निद्धि सिद्धि दाता, बिरद हस्त धारणं॥ सुखाब्धि दीन पालकं, विशुद्ध नाम अंकजं॥ चरण शरण०॥७॥ बुद्धि अंध ज्ञान मंद,हीन छंद स्वष्टकं॥पूरन दास भाषिते सु,पाकनाम अष्टकं॥ त्वं प्रसाद सुगम सर्व, विशुद्ध नाम अंकजं॥चरण शरण० ॥ ८ ॥ ३१ ॥

अष्टक॥ मंगलरूप अनुपमपूरन,नाम कबीर

सो आप उदारा ॥मोपर दृष्टि दयाकरि हेरहु,हौं अति बालक दास तुम्हारा ॥ काय अपार महा बल भारथ, देखतके मम चित्त डेरावे ॥ कीजै कृपाउर अंतरजामिसु,संकटसे बहुजीव दुखावे ? लोभ महामद क्रोध उपावत,होत अधीर बहूचित मेरो ॥ मोह मया ममता रजनीवत, बारम्बार रह्यो नित घेरो ॥ एक उपाय अहै बचबे अब होहु दयाल दयाकरि हेरो ॥ काह कहूँ कछु आप छिप्यो कहां,हो प्रभु नाथ अनाथन केरो ॥२॥ मोकहतात तुही पितु मातसु, और उपाय नहीं कछु मोही ॥जो सुत मातु पिता ढिग आवत तो वह मातु सो दृष्टि न जोई ॥ तो पुनिलोटतपोटत अंगन, लेत उठाय दयाकरि वोही॥ त्यों गुरुदेव कबीर कृपालसु, हौं एक आश शरणगतितोही३ दासको संकट देखि दयानिधि, ह्वै करुणाकर आतुर धायो ॥ इंद्रमती जब टेर कियो प्रभु, जाय तहां वह पीर मिटायो॥ बांधत सेतु सहाय

कियो प्रभु,रामहु केर उपाय बनायो ॥ कौनसो संकट मोहि गरीबको,जो तुमसे नहिं जातछुडायो ॥ ४ ॥ जाय पुरी पुरुषोत्तमके प्रभु, देकर दंड समुद्र हटायो ॥ विप्रनके अभिमान महा प्रभु, तोरनको बहुरूप दिखायो ॥ वे भये दीन परे चरणों तब चारिहुं जाति सो एक मिलायो ॥ दास जहां जहां जो कछु टेरत, ताकर होहु तुम बेगि सहायो ॥ ५॥ मोकह काहे बिसारत साम्रथ, दीनदयालु कबीर उदारा ॥ आनँदरूप अजीत गोसांईसु, मोह मया सबसे प्रभु पारा ॥ साक्षि स्वरूपअनूपम शोभित,पारखरूप अकारतुम्हारा हौं अतिदीन अधीन दुखी, बहु, मेटहु मोर अघोर अँधारा ॥ ६ ॥ यह बर माँगहु देहु दया करि, अंतरजामिसु ज्ञान प्रकासा ॥ बोध स्वरूपसदा निर्णय गुरु, सो मनमें तुम होहु उजासा ॥ वेद पुराण कुराण जो गावहिं, पार न पावहि होंहि उदासा ॥ जापर मौज करो तुम साहेब, सो पुनि

हंस मिले तुम पासा ॥ ७ ॥ ये गुरु अष्टक पाठ करे नर, आप सुने अरु ध्यान धरेंगे॥ह्वै सरधा अति प्रेमहुं पावत, मारग चाल सुचाल चलेंगे॥ ते नर पावहिं मुक्ति पदारथ, पाखंडरूप विकार तजेंगे ॥ होय सुखी लहि आनँदको पद, सो भव-सागर पार लगेंगे ॥ ८ ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी–अजर अखंडरूपि, परम प्रकाशी देखो, सूर्यसे उजासी लेखो॥अतिहि सोहायो है, ब्रह्म जग भर्म मिटि, झांई संधि काल नाशी, संशय सब चूर करी, धूरसी उडायो है ॥ वेदहु प्रमाण और बानीनके मत जेते, औरहु सिद्धांत सोतो, सर्व ले देखायोहै ॥ सबहु जाने सोतो, सर्व हुसे न्यारो रहे सोई गुरुरूप निज, पारख लखायो है॥ ३३ ॥

दोहा–वारों तन मन धन सबै, पद परखावनहार॥ युग अनंत जो पचि मरे, विन गुरु नहिंनिस्तार३४

श्लोक--ध्यातं सतगुरुश्वेतरूपममलं श्वेतांबरं

शोभितं॥कर्णैः कुंडल श्वेत शुभ्र मुकुटं हिरा मणि मंडितं ॥ नाना माला मुक्तादि शोभित गला पद्मासने संस्थितं ॥ दयाब्धि धीर सुप्रसन्न वदनं सतगुरु तन्नमामि ॥ ३५ ॥ द्वैपदं द्वै भुजं प्रसन्न वदनं द्वै नेत्रं दयाल ॥ सेली कंठमाल ऊर्ध्व तिलकं श्वेतांबरी मेखला ॥ चक्रांकित शिर टोप रत्न खचित द्वै पंच तारा धरे ॥ वंदे सतगुरु योगदंड सहितं कबीरं करुणामयम् ॥ ३६ ॥

दोहा- बंदनिये गुरु परखको,बारबार कर जोर।
दयाकरण संशय हरण संतरूप प्रभु तोर ॥३७॥
बंदीछोर कृपालु प्रभु, विघ्न विनाशिक नाम ॥
अशरण शरण बंदों चरण, सब बिधि मंगल धाम॥३८॥बंदेसन्मुखपारखी,शीस भेंटधरु हाथ।
वचन उचारो बंदगी, सत्य प्रेमके साथ ॥३९॥

(सब सेवक तथा साधु मिलके महंतों की बंदगी भये बाद सब मिलके महंतों की आरती करना)

आरती शब्द॥ आरती हो गुरु आरती हो ॥

आरती गरीब निवाज,साहेब आरती हो॥टेक॥ ज्ञान अधार बिवेक की बाती, सुरती ज्योति जहँ जाग॥१॥ आरती करूं सतगुरु साहेबकी, जहां सब संत समाज॥२॥अरस परस मन बहु आनँदभयो,टूटि गये सब यमकेजाल॥३॥साहेब कबीर संतनकी कृपासे,भयो परखपरकाश४०॥

(उपरान्त सब साधु तथा सेवकोंने खडे होके सतगुरु प्रार्थना स्तुति कहना)

दोहा–दास जानि निज आपना, विनती सुनिये मोर॥बिनवतहौं कर जोरिके,गुरु शरणागत तोर ॥१॥कामक्रोध मद लोभमें,नित मैं रहों भुलाय दीन दास प्रभु जानिके, लीजेबन्दि छुडाय॥२॥ मम दृष्टि महा मलीन है, खानी बानीके बीच॥ दयागुरु बोधिये, मैं अधम अति नीच ॥ ३ ॥ काल जाल बहु फेरमें,परचो मैं निपट गंवार॥ शरण आयेकी लाज है साहेब लीजे उबार॥४॥ मन बच कर्म गुरु साधुसे, टूटे ना मम नेह ॥

बन्दी छोर यहि दीजिये;वरदान सदा अक्षेह ॥५॥ साहेब के दरवारमें, कमी काहुकी नाहिं बन्दा मोहि पावै नहीं, चूक चाकरी मांहि॥६॥

गुरु स्तुति छन्द–गुरु दुखित तुम विनु रटहु द्वारा, प्रगट दरशन दीजिये॥गुरु स्वामीया सुनु विनती मोरी बलिजाउं बिलम न कीजिये॥गुरु नैन भरी रहत हेरों निमिष नेह न छाडिये॥ गुरु बांह दीजे बन्दि छोर सो,अबकी बंद छुडाइये॥ विविधि विधि तन भयेउ व्याकुल, बिन देखें अब ना रहौं । तपत तनमें उठत ज्वाला, कठिन दुख कैसे सहों ॥ गुण अवगुण अपराध छिमा करो, अब न पतित बिसारिये ॥ यह बिनति धर्मदास जनको; सत्त पुरुष अब मानिये ॥७॥ श्लोक॥न गुरोरधिकं तत्त्वं,न गुरोरधिकं तपः ॥ गुरुज्ञानात्परं नास्ति, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥८॥

॥ इति संज्ञापाठ गुरुस्तुति गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८